खण्ड-01 सत्र-01 / अंक-02

शुक्रवार 19 दिसम्बर, 2008 / अग्रहायण 28, 1930 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

चतुर्थ विधान सभा

प्रथम सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड-01 में अंक 01 से 04 तक सम्मिलित हैं)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

Delhi Legislative Assembly Library
Acc. No. R-12409
Source Delhi Vidhan Sabha
Price
Signature
4/2/00
328. 5456
DEL

विषय सूची

सत्र-01, शुक्रवार, 19 दिसम्बर, 2008 / अग्रहायण 28, 1930 (शक) अंक-02

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	1-3
2.	शपथ / प्रतिज्ञान	4-7
3.	अध्यक्ष का निर्वाचन	6-20
4.	अध्यक्ष द्वारा घोषणा (उपाध्यक्ष के निर्वाचन के संबंध में)	30-31

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

सत्र-01 दिल्ली विधान सभा के पहले सत्र का दूसरा दिन अंक-02

सदन अपराह्न 2.00 बजे समवेत हुआ।

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय (डॉ. जगदीश मुखी) पीठासीन हुए।

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए :-

1. प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा
2. श्री अनिल भारद्वाज
3. श्री अरविन्द्र सिंह
4. श्री अ. दयानन्द चन्दीला अ.
5. श्री अनिल झा
6. श्री अनिल कुमार
7. श्री बलराम तंवर
8. डॉ. बिजेंद्र सिंह
9. श्रीमती बरखा सिंह
10. श्री भरत सिंह
11. श्री धर्मदेव सोलंकी
12. श्री देवेन्द्र यादव
13. श्री हसन अहमद
14. डॉ. हर्ष वर्धन
15. श्री हरशरण सिंह बल्ली
16. श्री हरिशंकर गुप्ता

17. श्री जयभगवान अग्रवाल
18. श्री जय किशन
19. डॉ. जगदीश मुखी
20. श्री जसवंत सिंह
21. श्री करण सिंह तंवर
22. श्री कंवर करन सिंह
23. श्री कुलवन्त राणा
24. श्री मोहन सिंह बिष्ट
25. श्री मुकेश शर्मा
26. श्री महाबल मिश्रा
27. श्री मालाराम गंगवाल
28. श्री मतीन अहमद
29. श्री मनोज कुमार
30. श्री नन्द किशोर
31. श्री नरेश गौड़
32. श्री नसीब सिंह
33. श्री नीरज बसोया
34. डॉ. नरेन्द्र नाथ
35. श्री ओ.पी. बब्बर
36. श्री परवेज हाशमी
37. श्री प्रहलाद सिंह साहनी
38 चौ. प्रेम सिंह
39. श्री रमाकान्त गोस्वामी
40. श्री राजेश जैन
41. श्री राजेश लिलोठिया
42. श्री रामबाबू शर्मा
43. श्री रमेश बिधुड़ी
44. श्री रविन्द्र नाथ बंसल

45. श्री राम सिंह नेताजी
46. श्री शोयब इकबाल
47. श्री साहब सिंह चौहान
48. श्री सुरेन्द्र पाल रातावाल
49. श्री सुभाष चोपड़ा
50. श्री सुभाष सचदेवा
51. श्री सुरेन्द्र कुमार
52. श्री सुरेन्द्र पाल सिंह
53. श्री सुरेन्द्र कुमार
54. डॉ. एस.सी.एल. गुप्ता
55. श्री सुमेश
56. श्री श्रीकृष्ण
57. श्री सुनील कुमार
58. श्री सत प्रकाश राणा
59. श्री श्याम लाल गर्ग
60. श्री तरविन्दर सिंह मारवाह
61. श्री वीर सिंह धिंगान

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-01, शुक्रवार, 19 दिसम्बर, 2008 / अग्रहायण 28, 1930 (शक) अंक-02

सदन अपराह्न 2:00 बजे समवेत हुआ।

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय (डॉ. जगदीश मुखी) पीठासीन हुए।

अध्यक्ष महोदय : जिन सदस्यों ने 18 दिसम्बर, 2008 को शपथ नहीं ली या प्रतिज्ञान नहीं किया है, वे शपथ लेंगे तथा प्रतिज्ञान करेंगे और नामावली में हस्ताक्षर करके अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

सचिव (विधान सभा) : जिन सदस्यों ने दिनांक 18 दिसम्बर, 2008 को शपथ नहीं ली, उनके नाम हैं:

		शपथ/प्रतिज्ञान
1.	श्री शोएब इकबाल	उर्दू
2.	डॉ. एस.सी.एल. गुप्ता	हिन्दी

श्री हरशरण सिंह बल्ली : अध्यक्ष महोदय, इस सदन के पूर्व सिटिंग सदस्य श्री पूरन चंद योगी जी की मृत्यु हो गयी, अध्यक्ष जी, अगर किसी सिटिंग मेम्बर की मृत्यु हो जाती है तो जब हाउस चलता है तो उसके लिए शोक प्रस्ताव भी होता है, श्रद्धांजलि दी जाती है, मैंने चारों दिनों के एजेंडा पढ़ लिए हैं, उसमें उनके लिए किसी शोक प्रस्ताव के बारे में नहीं लिखा गया है। अध्यक्ष जी, ऐसा एक न एक दिन हम सबके साथ होना है। योगी जी सभा के मेम्बर थे और यहां पर उन्होंने अपने जीवन का काफी बड़ा काल बिताया है। उनके लिए क्या हम शोक प्रस्ताव भी न करें।

अध्यक्ष महोदय : बल्ली जी, आपने ठीक फरमाया, निश्चित रूप से शोक प्रस्ताव भी होगा, उसका निश्चित समय है, जब सोमवार को नियमित रूप से सदन की कार्यवाही होगी तो एजेंडे में सबसे पहले यही आयेगा। मेरा आपसे निवेदन है और मैं आपको बताना चाहता हूं कि एजेंडा जब हमारे पास आता है तो उसको अपडेट करके आपके पास रखा जाता है और निश्चित रूप से शोक प्रस्ताव रखा जायेगा। उसमें और भी शोक प्रस्ताव हैं, वे सभी रखे जाएंगे।

श्री हरशरण सिंह बल्ली : अध्यक्ष जी, यह कोई ऐसी घटना तो नहीं है, जो कल होनी है। यह प्रस्ताव आना चाहिए था। ...

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : उसमें और भी हैं, जो हमारे प्रस्ताव आने वाले हैं, वो भी उसमें सम्मिलित होंगे।

श्री हरशरण सिंह बल्ली : नहीं, नहीं यह घटना ऐसी तो नहीं है जो कल होगी। यह घटना हो चुकी है, इसको तो एजेंडे में आ जाना चाहिए था।

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : मैं आपसे सहमत हूँ। निश्चित ही यह एजेंडा में आएगा।

श्री हरशरण सिंह बल्ली : अध्यक्ष जी, पहले आना चाहिए था, इससे भी आप सहमत हों ना कि आ जाना चाहिए था।

अध्यक्ष का निर्वाचन

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : एक और एजेंडा आएगा। आप बैठिए। माननीय सदस्यगण, आपको मालूम ही है कि आज सदन के अध्यक्ष का चुनाव होना है। मुझे अध्यक्ष के चुनाव हेतु पाँच प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। सबसे पहले मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगी।

Chief Minister (Smt. Shiela Dikshit) : Sir, I, Smt. Shiela Dikshit, Chief Minister, do move the following Motion: "that Dr. Yoganand Shastri, a Member of this House be chosen as the Speaker of this House."

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : श्री रमाकांत गोस्वामी, प्रस्ताव का समर्थन करेंगे।

श्री रमाकांत गोस्वामी : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन की नेता माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित जी ने जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, मैं उसका अनुमोदन करता हूँ।

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : अब डॉ. ए.के. वालिया, अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

Dr. A.K. Walia : Sir, I move the following Motion: "that Dr. Yoganand Shastri, a Member of this House be chosen as the Speaker of this House."

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : श्री हारुन युसुफ, प्रस्ताव का समर्थन करेंगे।

Shri Haroon Yusuf : Mr. Speaker, Sir, I second the Motion.

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : अब श्री अरविंदर सिंह लवली अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

Shri Arvinder Singh Lovely : Sir, I move that Dr. Yoganand Shastri, Member of this House be chosen as the Speaker of this House."

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : श्री नसीब सिंह, प्रस्ताव का समर्थन करेंगे।

श्री नसीब सिंह : मैं श्री अरविंदर सिंह लवली द्वारा रखे गये प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : अब श्री मंगत राम सिंघल अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

Shri Mangat Ram Singhal : Sir, I, Mangat Ram Singhal, move that Dr. Yoganand Shastri, a Member of this House be chosen as the Speaker of this House."

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : अब श्री अमरीश सिंह गौतम प्रस्ताव का समर्थन करेंगे।

श्री अमरीश सिंह गौतम : मैं माननीय मंगत राम सिंघल जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : अब प्रो. किरण वालिया अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगी।

प्रो. किरण वालिया : अध्यक्ष जी, मैं प्रस्ताव करती हूँ कि डॉ. योगानंद शास्त्री, जो इस सदन के सदस्य हैं, को इस सदन का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाये।

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : श्री वीर सिंह धिंगान, प्रस्ताव का समर्थन करेंगे।

श्री वीर सिंह धिंगान : अध्यक्ष जी, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : अब मैं मुख्यमंत्री द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव को मतदान के लिए रखता हूँ।

प्रश्न है कि डॉ. योगानंद शास्त्री, जो इस सदन के सदस्य हैं, को इस सदन का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाये।

जो इस प्रस्ताव के पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,
जो इसके विरोध में हैं, वो ना कहें

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता
प्रस्ताव पास हुआ

डॉ. योगानंद शास्त्री जी, अध्यक्ष पद के लिए निर्वाचित घोषित किए गए।

कार्यवाहक अध्यक्ष महोदय : चूंकि पहला प्रस्ताव पास हो गया है, इसलिए नियमानुसार अन्य प्रस्तावों को लेने की आवश्यकता नहीं रह जाती है। अतः मुझे यह घोषणा करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि डॉ. योगानंद शास्त्री नवगठित चौथी विधान सभा के अध्यक्ष निर्वाचित हो गए हैं। सबसे पहले मैं नव निर्वाचित अध्यक्ष को बधाई देता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि

आप इस सदन की गरिमा को बनाए रखेंगे। जिस आसन पर आज आप विरामान होने वाले हैं, उस पर श्री विट्ठल भाई पटेल जैसी शख्सियत विराजमान हो चुके हैं। आज पार्लियामेंट और विभिन्न विधान मंडलों में जो परंपराएं, प्रथाएं चल रही हैं, वो श्री विट्ठल भाई पटेल की ही देन हैं। मुझे आशा है कि आप भी उस कसौटी पर खरा उतरेंगे और दिल्ली विधान सभा की कार्यवाही हो बहुत ही सुचारू ढंग से और निष्पक्ष ढंग से चलायेंगे। पक्ष और प्रतिपक्ष के सभी माननीय सदस्यों का सहयोग आपको मिलता रहेगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं नव निर्वाचित अध्यक्ष को एक बार पुनः बधाई देता हूं। अब मैं मुख्यमंत्री और प्रतिपक्ष के नेता श्री विजय कुमार मल्होत्रा जी से अनुरोध करूंगा कि नव निर्वाचित अध्यक्ष को उनके आसन तक लेकर के आएं।

(सदन की नेता एवं प्रतिपक्ष के नेता नव निर्वाचित माननीय अध्यक्ष डॉ. योगानंद शास्त्री को उनके आसन तक लेकर आए)

अध्यक्ष महोदय (डॉ. योगानन्द शास्त्री) : अब मुख्यमंत्री जी कुछ कहेंगी।

मुख्यमंत्री : धन्यवाद, माननीय अध्यक्ष जी, सबसे पहले पूरे सदन की ओर से मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देती हूँ और शुभकामनाएँ देती हूँ। मुखी साहब ने बहुत सही फरमाया कि इस असैम्बली की गरिमाएं बहुत ऊंची रही हैं और इसको कई बार one of the best run Assemblies घोषित

किया गया और इसकी सबसे बड़ी परंपरा, अच्छी परंपरा यह रही है कि पक्ष का हो या विपक्ष का हो, उसको अपनी बात कहने का हमेशा पूर्णतया मौका मिला। बहुत सारे हमारे सदस्य हैं, पक्ष में भी और विपक्ष में भी, जो पहली मर्तबा यहां आए हैं। उनको यह जानकार खुशी होगी कि पिछले वर्षों में यह हमेशा इस असेम्बली ने बड़ी अच्छी तरह से वाद-विवाद किया है और कभी-कभी वेल में जरूर आ जाते हैं लेकिन वो उनका कसूर नहीं है वो हमारे पत्रकारों का कसूर है क्योंकि वो पत्रकारिता थोड़ी बहुत अच्छी लगती है कि जब वो वेल में कूदते हैं लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि जो यहां आज हम शक्लें देख रहे हैं, चेहरे देख रहे हैं, वो एक बड़ा अच्छा समन्वय हैं, मैच्योरिटी का और यूथ का। आपका इस कुर्सी पर आसीन होना हममें विश्वास पैदा करता है कि जिस तरह से आपने अपनी मर्यादाओं को, चाहे आप मंत्रिपरिषद् में रहे हों, चाहे उसके बाहर रहे हों, आपने जिस तरह से उनका पालन किया है, इस असेम्बली में भी वही परंपरा आप चलायेंगे। हमारी ओर से आपको पूरा सहयोग व समर्थन मिलेगा और जो आपके आदेश होंगे उनका हम पूरी तरह से पालन करेंगे और मैं अपने दल की तरफ से तो यह कह सकती हूँ कि कभी हम उस सीमा को लांघने की कोशिश नहीं करेंगे जो सीमा इस हाउस की मर्यादा को किसी भी तरह से कम करें। बहुत-बहुत धन्यवाद और शुभकामनाएं।

अध्यक्ष महोदय : प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा जी।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : अध्यक्ष महोदय, आपके अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर मैं आपको अपनी ओर से एवं अपने दल की ओर से बधाई और शुभ कामनाएँ देता हूँ। यह जैसा बताया है कि यह बहुत ही प्राचीन सभा-स्थल है और इसमें बहुत लोग जो कि इस स्थान पर सुशोभित हुए हैं। उन्होंने इस सदन को गौरवान्वित किया है। आज आपके इस निर्वाचन से आपने भी इस सदन का गौरव बढ़ाया है। आप विद्वान हैं, सुसंस्कृत हैं और आप इस सदन को निष्पक्ष भाव से चलायेंगे, हम ऐसी आशा रखते हैं। ऐसा आम तौर पर कहा जाता है कि यह विक्रमादित्य की तरह से यह स्थान है और जो भी इस पर बैठता है, वो निष्पक्ष रूप से सारी कार्यवाही को चलाता है। यह भी कहा जाता है कि जो majority party है, जो गवर्नमेंट है, Government will have its way, उनकी majority है, वो अपना पूरा जो भी करना चाहेंगे, वे करेंगे But the opposition should have its say. Opposition को कम से कम अपनी बात कहने का अवसर जरूर मिलना चाहिए। मैं कहना तो नहीं चाहता था लेकिन शीला जी ने एक ऐसा रिमार्क कर दिया कि बहुत से लोग वैल में आते हैं और उसका कुसूर मीडिया का है। यह न कहा जाता तो ज्यादा अच्छा था। कोई भी व्यक्ति itself यहाँ पर आया और वो अपने आपको मीडिया के सामने पेश करने के लिए उसने विरोध किया। विपक्ष को अपनी बहुत सी बातें कहने का अधिकार है। परन्तु मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि इस हाउस को अच्छी प्रकार से चलाने

के लिए विपक्ष का पूरा समर्थन मिलेगा। हम आपके साथ पूरा समर्थन करेंगे और जो भी यहाँ की कार्यवाही होगी, उसमें जो भी नियम हैं, उन नियमों के अनुसार इस सदन को चलाने में हम आपका सहयोग करेंगे।

अध्यक्ष महोदय : श्री रमाकान्त गोस्वामी जी।

श्री रमाकान्त गोस्वामी : आदरणीय अध्यक्ष जी, आज हमें बड़ी प्रसन्नता है कि आप इस बहुत ही एक प्रतिष्ठित पद पर आसीन हुए हैं। उसके लिए आपको हार्दिक बधाई है और दिल्ली की जनता की ओर से भी हार्दिक बधाई है। काँग्रेस ने ऐतिहासिक विजय हासिल की है। यह एक ऐतिहासिक स्थल है। इस ऐतिहासिक स्थल पर जो आपका पद है, वो बहुत गरिमापूर्ण है, प्रतिष्ठित है और विवादों से बहुत दूर है। निष्पक्षता का प्रतीक है। मैं समझता हूँ कि आपका व्यक्तित्व इन सब बातों को पूरा करता है। जहाँ आप विद्वान हैं। आपकी सरलता, आपकी स्वाभाविकता और आपका जो चिन्तन है वो इस पूरे सदन को एक नई दिशा देगा एक नया चिन्तन देगा। जब भी इस हाउस में कभी कोई बात हुई है, हमारे पूर्ववर्ती जितने भी अध्यक्ष रहे हैं, उन्होंने इस सदन को बहुत ही गरिमापूर्ण ढंग से चलाया है और आपसे सारी दिल्ली ही नहीं, जो भी हमारा संवैधानिक इस देश में जो भी प्रतिष्ठान है, वो निश्चित रूप से यहाँ से मार्ग-दर्शन लेगा। यह मुझे पूरी उम्मीद है। अभी आदरणीय हमारे विपक्ष के नेता श्री मल्होत्रा जी ने कहा

कि जो सदन की नेता ने एक टिप्पणी की है। जहाँ तक मैं समझता हूँ, उनकी भावना कुछ और थी। उनकी भावना का अर्थ केवल यह था कि यह सदन एक अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण है और सदन की जो कार्यवाही है, वो एक मर्यादा के अंतर्गत चलनी चाहिए और हमें प्रसन्नता है कि श्री मल्होत्रा जी यहाँ पर विपक्ष के नेता के रूप में बैठे हैं, जो आपसे पूर्व थे और हम सभी बैठे हैं। हम में बहुत अच्छा भाईचारा है और यहाँ पर हमारा ऐसा संबंध है कि जैसे हम यहाँ पर प्रतिपक्ष और पक्ष नहीं होता, केवल मुद्दों को लेकर हम थोड़ा सा जरूर केवल विचारों में मतभेद होता है, मन भेद कभी नहीं हुआ। इस दृष्टि से मैं यह कह सकता हूँ कि आपके इस पद पर आसीन होने पर वो भी शायद जो हमारा मन-भेद है, वो भी दूर हो जायेगा। मैं इन आशाओं के साथ आपको अपनी शुभ कामनाएँ देता हूँ, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री कुलवन्त राणा जी।

श्री कुलवन्त राणा : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको विधान सभा का अध्यक्ष चुनने पर हार्दिक गहराइयों से पूरे ग्रामीण क्षेत्र की ओर से आपको बधाई देता हूँ और आपसे पूर्व भी इसी सदन की सदस्य 11 बार पहले भी जीते हैं। अब ग्यारवीं बार, चौधरी प्रेम सिंह जी ने बहुत अच्छा यह हाउस चलाया था और सारे नियमों का निर्वाह करते हुए सब को अवसर प्रदान करते थे। हमें आशा है कि आप भी किसी प्रकार के भेदभाव से

हटकर के और बहुत निष्पक्ष रूप से हाउस चलाकर के दिल्ली की जनता को और इस देश को यह संदेश देंगे। हम इस प्रकार की आशा आपसे रखते हैं और प्रथम बार आये हुए सदस्यों को भी, नये सभी नौजवानों को आप अवसर प्रदान करेंगे और बाकी आप सब विट्ठल भाई पटेल जी के द्वारा इस सदन की सभी गरिमाओं का पालन करते हुए आप यह हाउस चलायेंगे। ऐसी हमारी आपसे आशा है। अध्यक्ष जी, आपको बहुत-बहुत बध ाई।

अध्यक्ष महोदय : श्री अनिल भारद्वाज जी।

श्री अनिल भारद्वाज : अध्यक्ष महोदय, आपके आज इस सम्मानित सदन के अध्यक्ष के रूप में नव-निर्वाचन पर मैं अपनी ओर से और अपने क्षेत्र की जनता की ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और निश्चित रूप से आपके इस सदन के सदस्य के रूप में, मंत्रि.परिषद् के सदस्य के रूप में जो हमेशा एक महान व्यक्तित्व आपका रहा है और हमेशा आपने एक गरिमापूर्ण ढंग से जिस तरह से राजनीतिक और सामाजिक जीवन में जिये हैं। मैं आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास कर सकता हूँ कि सदन के अध्यक्ष के रूप में आपका जो कार्यकाल होगा वो निश्चित रूप से निर्विवाद होगा और हमेशा की तरह आपका राजनीतिक और सामाजिक जीवन का जो अनुभव है वो इस सदन की गरिमा को अध्यक्ष के रूप में और बढ़ायेंगे और इस सदन को और आगे ले जायेंगे। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री साहब सिंह चौहान जी।

श्री साहब सिंह चौहान : अध्यक्ष महोदय, आपके निर्वाचन पर मैं अपनी ओर से और अपने क्षेत्र की ओर से और यमुना पार के लोगों की ओर से शुभ कामनाएँ भेंट करता हूँ। अध्यक्ष महोदय, जैसा अभी नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि यह सिंहासन विक्रमादित्य का सिंहासन है। यह एक वो हिस्टोरिकल बिल्डिंग है, जहाँ 1926 तक यहाँ पार्लियामेंट भी चली और यहाँ पर महात्मा गाँधी जी भी दर्शक दीर्घा में रहे हैं। श्री मोती लाल नेहरू भी यहाँ पर उपस्थित रहे। बहुत सारी अच्छी परम्पराएँ आपसे पूर्ववर्ती अध्यक्षों ने डाली हैं। उनका तो निर्वहन होगा ही, ऐसी भी पार्लियामेंट में परम्परा रही है कि जब भी अध्यक्ष चुने गए क्योंकि अध्यक्ष को सदैव पार्टी से ऊपर माना जाता है और यहाँ पर भी विपक्ष ने भी आप में पूर्णतः सम्मान व्यक्ति किया है। वे अपनी राजनीतिक पार्टी से भी इस्तीफा दे देते हैं। वे पूरी तरह से राजनीतिक पार्टी के सदस्य नहीं रहते हैं क्योंकि यह एक ऐसा पद है। आपको हम ने यहाँ मंत्री के पद पर भी देखा है और हम ने comments भी लिखकर के, आप तक पहुँचाये हैं कि आपने यहाँ पर सदस्यों को पूरी तरह से संतुष्ट किया है, उनकी जिज्ञासा और जो भी उनके प्रश्न रहे हैं। हम आपसे यह भी अपेक्षा करते हैं कि आप निष्पक्ष रूप से विपक्ष और सत्ता पक्ष को ध्यान में रखते हुए अच्छी परम्पराएँ भी डालेंगे और निवेदन भी करना चाहूँगा कि जैसे पीछे रहा है कि मुश्किल से वर्ष में एवरेज 23.24 sittings हो पाती

हैं। इतने समय में पूरी बात नहीं कही जातीं और सदस्यों को पूरा अवसर भी नहीं मिल पाता है। अभी भी ऐसा ही लग रहा है क्योंकि अब आपके रहते हुए एल.जी. एड्रैस भी होना है और एल.जी. अड्रैस पर नॉर्मली four days are needed and उस समय पर केवल एक दिन और यदि डिप्टी स्पीकर का चुनाव हो गया तो फिर उसमें भी टाइम निकल जायेगा तो hardly that will be an eye-wash on the L.G. Address. मैं यह निवेदन करूँगा कि आप इस सत्र को आगे भी बढ़ायें। ऐसा निवेदन सरकार से भी करें और एल. जी. साहब से भी करें और आगे भी भविष्य में अधिक से अधिक सदन की सिटिंग्स हो सकें और यहाँ पर दिल्लीवासियों की समस्याओं को पूरी तरह से उठाकर के उनका निदान किया जा सके। उसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। हम पुनः आपको शुभ कामनाएँ देते हैं। आपको बहुत-बहुत शुभ कामनाएँ धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री नरेश गौड़।

श्री नरेश गौड़ : अध्यक्ष महोदय, मैं दिल की गहराइयों से आपको शुभकामना देता हूँ, बधाई देता हूँ। अध्यक्ष महोदय, हमने आपको मंत्री के रूप में देखा है। मधुर वाणी, सौम्य व्यवहार, संस्कृत के आप महान पंडित हैं। अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष का पद कोई हेडमास्टर का पद नहीं है कि क्लास में किसी को भी धमका कर या डण्डे मार कर किसी को बिठा दे। अध्यक्ष महोदय, आप अध्यक्ष बनने से पहले हमारी ही तरह विधायक थे।

आपको यह सब विधायकों की भावनाओं को समझने का, विधायकों को अपनी बात कहने का मौका मिले, अपने मन की बात वे अच्छी तरह से कह सकें, आप इसके लिए पूरा-पूरा मौका उनको देंगे। अध्यक्ष महोदय, जैसे अभी श्री साहब सिंह चौहान जी ने कहा कि दिल्ली में समस्याएं भरी पड़ी हैं। दिल्ली समस्याओं का घर है और दिल्ली के बारे में कहा जा रहा है कि दिल्ली को दुनिया की बड़ी राजधानी बनायेंगे, पैरिस बनायेंगे, हाँगकाँग बनायेंगे। अध्यक्ष महोदय, कुल साल में सदन की 18-20 बैठकें होती हैं। दिल्ली में जितने विभाग हैं, उनकी बात हो भी नहीं पाती। तो जो एक कमेटी ने सिफारिश की है कि छोटी विधान सभाओं की एक वर्ष में कम से कम 60 मीटिंग्स होनी चाहिए जिससे दिल्ली के विधायक, जिनके ऊपर दिल्ली के विकास की जिम्मेदारी है, वह दिल्ली का विकास अच्छी तरह से करा सकें और दिल्ली की समस्याओं को अच्छी तरह से उठा सकें, इस लिए आवश्यक है कि अधिक से अधिक मीटिंग इस विधान सभा की हों! जिससे विधायक अपनी बात कह सकें।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बार पुनः आपको बधाई देता हूँ और यह आशा करता हूँ कि आप सत्ता पक्ष के साथ-साथ विपक्ष के साथ भी न्याय करेंगे, अन्याय नहीं करेंगे। उनको अपनी बात कहने का पूरा मौका देंगे। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री मोहन सिंह बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्ट : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं आपको अध्यक्ष बनने पर बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। अध्यक्ष महोदय, वास्तव में यह प्रतिष्ठित पद है जिस पर आप सुशोभित हुए हैं! संस्कृत के एक श्लोक में कहा गया है:-

मूकं करोति वाचालं पंगुं लघयते गिरिम्
यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्द माधवम्।

वास्तव में यह एक गरिमामय पद है, जिस पर आप जैसा व्यक्ति सुशोभित हुआ है। निश्चित रूप से मैं मानता हूँ दिल्ली जैसी नगरी के अंदर जहाँ समस्याओं का अम्बार है। इसमें बहुत से लोक महत्व के मुद्दे पिछले दिनों जिस प्रकार से उठते रहे और जिस प्रकार आदरणीय चौ. प्रेम सिंह जी का बहुत योगदान उन कामों को करने में रहा, सरकार से उन्होंने हम सब लोगों, चाहे वह सत्ता पक्ष हो या विपक्ष हो, उसकी मदद की। हम आपसे भी यही अपेक्षा करते हैं कि इस प्रकार के दिल्ली के लोक महत्व के मुद्दों को निश्चित रूप से निष्पक्ष रूप से निष्पक्ष भावनाओं से इन समस्याओं का समाधान हो, जिससे दिल्ली के लोगों को वास्तविकता के आधार पर जन प्रतिनिधियों को लगे कि जिस जनता ने हमें चुनकर भेजा है, उनकी आकांक्षाओं पर हम खरे उतरें। हम यही आपसे अपील करना चाहते हैं कि जिस पद पर आप बैठे हैं, निश्चित रूप से दिल्ली की जनता को और सभी सदस्यों

को आपसे न्याय मिलेगा। यही मैं कहना चाहता था। मैं पुनः आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री नसीब सिंह जी।

श्री नसीब सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दिल की गहराइयों से आपको बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ। मैं धन्यवाद करता हूँ अपनी सदन की नेता और काँग्रेस पार्टी का कि जिन्होंने आप जैसे सुसंस्कृत व्यक्ति को इस पद के लिए अपना उम्मीदवार बनाया। जिसके बारे में मैं समझता हूँ कि आप जैसा हमारी इस विधान सभा को नेतृत्व देने के लिए व्यक्तित्व मिला है। मै एक बार फिर बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री जय किशन।

श्री जय किशन : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने क्षेत्र की जनता की तरफ से और अपनी तरफ से आपको विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित होने पर दिल की गहराई से बधाई देता हूँ। इसमें तो कोई शक नहीं है कि आप पक्ष के साथ-साथ विपक्ष का भी उतना ही ध्यान रखेंगे क्योंकि आपकी जो कार्यशैली है, उसमें बहुत बड़ी क्षमता है और आपकी जो योग्यता है, इस योग्यता के लिए आपको अध्यक्ष बनने पर मैं पुनः आपको बधाई देता हूँ। धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय : श्री सुनील वैद्य। आप पहली बार चुनकर आये हैं। हम आपका पहली बार बोलने पर स्वागत करते हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री हरशरण सिंह बल्ली : अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है। यहाँ ऑफीसर गैलरी में नॉन आफिशियल लोग बैठे हैं। इनको बाहर निकाला जाये। यहाँ पॉलिटिकल लोग बैठे हैं। ये इस हाउस का मजाक उड़ा रहे हैं। यह कोई मछली बाजार थोड़े ही है कि यहाँ आकर बैठे हैं। ...**(व्यवधान)**...

अध्यक्ष महोदय : सभी चले गये हैं ... चले गये हैं। ...**(व्यवधान)**...

अध्यक्ष महोदय : देखिये, मैंने सुनील वैद्य जी का नाम बोला है, वैद्य जी को बोलने दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

अध्यक्ष महोदय : बैठे-बैठे मत बोलिये।

श्री सुनील वैद्य : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं आपको इस सदन का अध्यक्ष चुने जाने पर हार्दिक बधाई देता हूँ और because I belong to SC community, तो दिल्ली को एस.सी. कम्युनिटी और विशेषकर वाल्मीकि समाज की ओर से आपको हार्दिक बधाई। अध्यक्ष महोदय, मैं पहली बार सदन का सदस्य बना हूँ। इस नाते भी कुछ आपसे सीखने को मिलेगा

और यहाँ पर बहुत से सदस्य ऐसे हैं जो चार बार से, तीन बार से, दो बार से लगातार मेम्बर बन रहे हैं। दिल्ली की जनता सदन की कार्यवाही भी देखती है और हमारे आचरण की समीक्षा भी करती है। तो मैं ऐसी आशा करता हूँ कि हम जैसे नये मेम्बर्स को भी एक आदर्श यहाँ देखने को मिलेगा ताकि हम लोग भी आगे चलकर अपने सीनियर मोस्ट मेम्बर को फालो कर सकें और जैसा कि हम कुछ नये मेम्बर भी यहाँ पर हैं। तो सभी को पुराने मेम्बरों की तरह हमें भी जनता की और अपनी बात रखने का अवसर दिया जाये। एक बार पुनः मैं अपने विधान सभा क्षेत्र की ओर से एस.सी. समाज की ओर से वाल्मीकी समाज की ओर से आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री शोएब इकबाल जी।

श्री शोएब इकबाल : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको अपने दिल की गहराई से बहुत-बहुत मुबारकबाद पेश करता हूँ और आप जिस पद पर विराजमान हैं, वह बहुत ही आइनी और बहुत ही अहम पद है, इसमें कोई शक नहीं कि जैसा कि प्रो. मल्होत्रा साहब ने और मुख्यमंत्री साहिबा ने कहा कि इस पद पर बड़े-बड़े व्यक्ति विराजमान हुए हैं और यहाँ बहुत अहम फैसले लिये गये। अध्यक्ष महोदय, यह सदन जो यहाँ सदस्य चुनकर आते हैं, वे इस सदन में अपने क्षेत्र की अपनी बात को उठाते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि इससे पहले भी जितने अध्यक्ष रहे, मैं पहली विधान सभा से यहाँ

का मेम्बर हूँ, चरती लाल गोयल जी हों, हम अपोजिशन में थे, तब भी या उसके बाद श्री सुभाष चोपड़ा जी रहे हों, चौ. प्रेम सिंह जी रहे हों, अजय माकन जी रहे हों जो भी रहे हों, सभी ने इस सदन को सुचारु रूप से चलाने का अपना कार्य किया है और मैं नहीं समझता, जब हम लोग विपक्ष में थे और मैं पिछले चार बार से विपक्ष में हूँ, आप सब तो आपस में एक-दूसरे से कहते रहे हैं लेकिन अध्यक्ष महोदय, कभी भी अहसास नहीं हुआ कि किसी भी तरह का भेदभाव हुआ हो और आपसे भी वही उम्मीदें हैं! आप एक पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं और कई जुबानों का आपको अधिकार हासिल है। यह अपने आप में एक बड़ी बात है कि एक ऐसे व्यक्ति हमारे सामने बैठे हैं कि जिनको कई जुबानों पर अधिकार हासिल हो। कांग्रेस पार्टी ने जो आपको इस ओहदे के लिए नाम प्रस्तावित किया है, मैं समझता हूँ कि यह बहुत बड़ा एक अच्छा फैसला लिया है। दिली मुबारकबाद है आपको उसके लिए और साथ ही दिल्ली की जनता के लिए भी यह फख्र की बात है कि आप जैसा व्यक्ति गांव का, देहात का, जिसकी इतनी काबलियत हो, वह इस पद पर आये हैं इसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत दिल की गहराइयों से मुबारकबाद पेश करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि आप सभी को सत्ता पक्ष हो या विपक्ष हो, सभी को अपनी बात कहने का मौका देंगे। धन्यवाद, जय हिन्द।

अध्यक्ष महोदय : प्रो. किरण वालिया।

डॉ. किरण वालिया : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको मुबारकबाद देती हूँ जो आपका चयन हुआ है और जो नियुक्ति हुई है, बहुत बढ़िया ढंग से हुआ है। यह सच है कि प्रजातंत्र का जो पूरा तकाजा है, जो उसमें सभी सदस्यों को बोलने का अधिकार है, वह इतना-इतना महत्वपूर्ण अधिकार है जिसके लिए पं. जवाहरलाल नेहरू जी कहा करते थे कि स्पीकर का दायित्व हो जाता है वह पूरे प्रजातंत्र का रक्षक हो जाता है क्योंकि यह बोलने का अधिकार, अपनी अभिव्यक्ति का अधिकार यदि कुचल दिया जाये तो विध ाान सभा या सदन का कोई अर्थ नहीं रहता और हमें पूर्ण आशा और विश्वास है कि जिस तरह से आपने हर पद को बड़ी खूबी से निभाया है, यह उसी ढंग से आप निभायेंगे और इसी आशा के साथ मैं आपको एक बार फिर बधाई देता हूँ आपने सभी पदों को बहुत सुन्दर ढंग से निभाया है, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री तरविन्दर सिंह मारवाह जी।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह : अध्यक्ष महोदय, मैं जंगपुरा विधान सभा क्षेत्र की ओर से आपको बधाई देता हूँ कि आप आज यहां इस सदन के अध्यक्ष चुने गये। साथ ही मैं मुख्यमंत्री जी का भी धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने आप जैसे सुलझे हुए आदमी को इस आसन पर बैठाया। आप पहले मंत्री भी रहे, मैं कांग्रेस पार्टी का भी धन्यवाद करता हूँ जिसने आपकी योग्यता और सरल वाणी को देखते हुए आपको इस आसन पर बैठाया, उसके लिए मैं फिर आपको पुनः मुबारकबाद देता हूँ। मैं एक बात जरूर कहूंगा कि

जो हमारे भाई नये चुन कर आए हैं, उनको आप ज्यादा से ज्यादा समय दें। जो नौजवान जो यहां पर नए चुन कर आए हैं, उनको ज्यादा समय दें जिससे उनको अनुभव बढ़े और वे जनता की ज्यादा से ज्यादा सेवा कर सकें। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री वीर सिंह धिंगान जी।

श्री वीर सिंह धिंगान : आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं हृदय से आपको बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूँ और साथ ही मैं आपने सदन की नेता श्रीमती शीला दीक्षित का भी बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने आपके नाम का प्रस्ताव यहां सदन में रखा। हम आपकी कार्यशैली से पूरी तरह से वाकिफ हैं, जब आप मंत्री पद पर थे तब हम कभी आपके पास काम के लिए गए आपने उस काम में हमारी पूरी मदद की। मुझे पूरा विश्वास है कि आप अपनी उसी कार्यशैली के अनुसार आप इस सदन का भी गौरव बढ़ाएंगे। मैं अपने सीमापुरी विधानसभा क्षेत्र की ओर से आपको बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूँ, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण,

आज इस महान सदन के सभी माननीय सदस्यों ने मुझे सर्वसम्मति से इस पद पर आसीन किया है और मुझे इस काबिल समझा कि मैं इस महत्वपूर्ण आसन पर बैठकर सारी दिल्ली की सेवा कर सकूं जिसे भारतीय संसदीय

इतिहास के सबसे पहले भारतीय निर्वाचित अध्यक्ष श्री विट्ठल भाई पटेल ने 1925 में सुशोभित किया था। आप सभी को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि जो कार्य मुझे सौंपा गया है उसको पूरा करने का मैं भरसक प्रयास करूंगा और इस महान सदन के मूल्यों को कायम रखने की कोशिश करूंगा। आज मैं बहुत भाव विभोर हो रहा हूँ जो स्नेह, प्यार और सम्मान आप लोगों ने मुझे दिया है उसको व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

प्रिय साथियों, प्रजातंत्र में एक मूल सिद्धांत है, "The Opposition should have its say. The Government should have its way". मुझे आशा है कि इसी सिद्धांत के अंतर्गत सदन सुचारु रूप से चलेगा क्योंकि जिस आसन पर मुझे आपने आसीन किया है, इस आसान पर श्री विट्ठल भाई पटेल विराजमान हुआ करते थे और उन्होंने जब उस समय की ब्रिटेन सरकार को भी सदन के प्रति उत्तरदायी बनाया था, जबकि हुकूमत की बागडोर ब्रिटेन के हाथ में थी।

आजादी के बाद जब यह सभागार दिल्ली के निर्वाचित प्रतिनिधियों की बैठक स्थल बना तो यहां पर सरदार गुरमुख निहाल सिंह, श्री जगप्रवेश चन्द्र, श्री लाल कृष्ण आडवाणी, श्री मीर मुश्ताक अहमद, श्री पुरूषोतम गोयल, श्री चरती लाल गोयल, श्री सुभाष चोपड़ा श्री अजय माकन एवं चौ. प्रेम सिंह जैसे वरिष्ठ व कर्मठ नेताओं ने इस आसन की शोभा बढ़ाई।

मेरे पूर्ववर्ती अध्यक्ष चौ. प्रेम सिंह जी दो बार इस सदन के अध्यक्ष रहें हैं। मुझे आशा है कि उनका प्यार और सहयोग मुझे और इस सदन को हमेशा मिलता रहेगा। यहां पर अनेक वरिष्ठ सदस्य हैं जो कि काफी लम्बे समय से इस सदन से और दिल्ली के विकास से जुड़े हुए हैं, कुछ नये सदस्य भी हैं जोकि आने वाले समय में अपनी कार्यशैली से दिल्ली विधान सभा का नाम रोशन करेंगे।

सदन की नेता श्रीमती शीला दीक्षित जी ने एक दशक से भी ज्यादा समय से दिल्ली और इस सदन को मर्यादामय बनया है। श्रीमान विजय कुमार मल्होत्रा जी प्रथम महानगर परिषद के समय 1967 में मुख्य कार्यकारी पार्षद रहे हैं। मैं आपका लगभग चार दशक बाद फिर यहां आने पर उनको हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि आपका सकारात्मक सहयोग सदन चलाने में हमेशा मिलता रहेगा।

बन्धुओं, यह हम सबको मालूम है कि इस सभा भवन में जहां हम सब बैठे हैं, इसका बहुत ही ऐतिहासिक महत्व है। आजादी से पहले यहीं से इस देश की राजनीति चलती थी और यह हमारा सौभाग्य है कि आज हम उस भवन के अन्दर बैठे हैं, जहां हमारे स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं ने बैठकर इसे सुशोभित किया था, जिनमें श्री गोपाल कृष्ण गोखले, श्री विट्ठल भाई पटेल, पं. मदन मोहन मालवीय, श्री मजहरूल हक, सुन्दर सिंह

मजीठिया, पं. मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपत राय जैसी विभूतियां थीं और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने यहां दो बार शिरकत की थी।

आपने मुझे इस आसन पर बैठा कर मेरे ऊपर बड़ी भारी जिम्मेदारी डाली है। मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूँ कि मैं पूर्णतया निष्पक्ष और बिना किसी भय, द्वेष और भेदभाव के इसकी मर्यादाओं की रक्षा करने का प्रयास करूंगा।

मैं अपने प्रतिपक्ष के साथियों को यकीन दिलाना चाहता हूँ कि इस सदन का सदस्य होने के नाते जो उनके अधिकार हैं, उनकी पूर्णतया रक्षा की जाएगी। मैं हमेशा यह याद रखूंगा कि मुझे सदन के सभी सदस्यों का समर्थन और विश्वास मिला है। मैं यह बात फिर मुख्य रूप से कहना चाहता हूँ कि हमारे माननीय सदस्यों के जो भी अधिकार हैं, मैं उनके अधिकारों की पूरी रक्षा करने का प्रयास करूंगा।

मैं सदन की नेता, मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित एवं नेता प्रतिपक्ष श्री विजय कुमार मल्होत्रा व सदन के सभी सहयोगियों का आभारी हूँ कि आपने सर्वसम्मति से मुझे चुना और समर्थन दिया। साथ ही मैं इस सदन के वरिष्ठ सदस्य, जिन्होंने हम सभी को इस विधान सभा की सदस्यता की शपथ दिलाई, डॉ. जगदीश मुखी का भी अभिनंदन करता हूँ।

प्रिय साथियों, हम सभी को दिल्ली की जनता ने यहां पर एक महान ध्येय के साथ भेजा है - वह है लोकतंत्र के जरिए जनकल्याण। आज खास जरूरत है कि न केवल दिल्ली की जनता को हम सुरक्षा की भावना दे सकें, उनकी जरूरतों को पूरा कर सकें, दिल्ली का विकास कर सकें और दिल्ली को एक विश्व स्तरीय नगरी बनाने के लिए आपस में बैठकर नए तरीके सोच कर विकास के मार्ग पर पहुँच सकें। दिल्ली को एक विश्व स्तरीय नगरी बनाने का जो सपना हमने देखा है, उसको आपस में मिलकर पूरा कर सकें। यह तभी संभव है जब हम ऋग्वेद के इस श्लोक की भावना के अनुरूप कार्य करें :-

संगच्छध्वं संबदघ्वं सं तो मनांसि जानताम्।
समानो मन्त्रः समितिः समानी।
समानं मनः सह चित्त्मेषाम्॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयामि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥

माननीय सदस्यगण इस श्लोक का भाव इस प्रकार है :-

मिलो परस्पर और एक सी वाणी बोलो,
रखो ध्येय समान, समिति में सहमत हो लो।

सम मत हों, सम हृदय और सम चित्त तुम्हारे,
वो मिल-जुल कर प्राप्त करो सुख साधन सारे॥

दिल्ली के शांतिमय वातावरण व विकास के आह्वान के साथ, उपरोक्त श्लोक की वाणी से अपने आपको, आप सभी को और दिल्ली की जनता को जोड़ते हुए दिल की गहराइयों से मैं आप सभी का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।

अध्यक्ष द्वारा घोषणा

अध्यक्ष महोदय : मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि विधान सभा की प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियमों के नियम-9 के अनुसरण में मैं 23 दिसम्बर, 2008 की तिथि उपाध्यक्ष के निर्वाचन के लिये निर्धारित करता हूँ। नियम-9 के उपनियम-2 के उपबंधों के अनुसार सदस्य निर्धारित तिथि के पूर्व मध्याह्न से पहले अर्थात् 12.00 बजे से पहले किसी भी दिन अपना प्रस्ताव दे सकते हैं। बर्तमान मामले में विधान सभा उपाध्यक्ष के चुनाव के लिए सूचना 22 दिसम्बर, 2008 को दोपहर 12.00 बजे तक दे सकते हैं। सदस्यों की सुविधा के लिए आवश्यक फार्म आदि विधान सभा सचिवालय के सूचना कार्यालय में उपलब्ध हैं।

माननीय सदस्यगण, सोमवार दिनांक 22 दिसम्बर, 2008 को पूर्वाह्न 11.00 बजे उपराज्यपाल महोदय सदन को सम्बोधित करेंगे। मैं सभी माननीय

सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि वे सोमवार को पूर्वाह्न 10.50 बजे तक सदन में अपना स्थान ग्रहण कर लें। इस प्रयोजन हेतु कोरम की घंटी नहीं बजाई जाएगी।

उपराज्यपाल महोदय के प्रस्थान के बाद सदन की बैठक 10 मिनट के पश्चात् विधिवत् पुनः आरंभ होगी।

अब सदन की कार्यवाही सोमवार 22 दिसम्बर, 2008 को पूर्वाह्न 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(सदन की कार्यवाही सोमवार 22 दिसम्बर, 2008 को पूर्वाह्न 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)।